an>

Title: The Speaker made reference on the occassion of International Women's Day.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आप सभी को मालूम ही है कि आठ मार्च पूरे विश्व में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर मैं आप सभी को, केवल महिलाओं को ही नहीं, आप सभी को अपनी तथा सभा की ओर से शुभकामनाएं देती हूं।

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : मैडम, आपको भी शुभकामनाएं।

माननीय अध्यक्ष : जी, धन्यवाद।

आप जानते हैं कि '**महिला जन प्रतिनिधिः सशक्त भारत की निर्माता**' - इस विषय पर यह अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में ही सोचा गया था और इस विषय पर पहली बार एक राष्ट्रीय महिला जन प्रतिनिधि सम्मेलन पांच और छः मार्च को नयी दिल्ली में आयोजित किया गया था। इस दो दिन के सम्मेलन में सभी राज्य एवं संघशासित क्षेत्रों की महिला जन प्रतिनिधियों के साथ लोक सभा तथा राज्य सभा की महिला सांसदों ने भी भाग लिया। महिला जन प्रतिनिधि सशक्त भारत के निर्माण में किस तरीके से सम्मिलित हो सकती हैं, किस तरीके से विचार कर सकती हैं, यह पूरा विचार इस सम्मेलन में हुआ। इसी के साथ-साथ राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में महिला जन प्रतिनिधियों का योगदान, उसके क्या आयाम हों, राष्ट्र में सुशासन एवं सम्यक विधेयन में उनकी कैसी भूमिका हो, इस पर भी विचार हुआ।

सम्मेलन में यह भी निष्कर्ष रहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षित पेयजल, आधारभूत सफाई सुविधाओं तक समान पहुंच को सुविधाजनक बनाना, सामाजिक और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और कार्यबल में महिलाओं की ज्यादा से ज्यादा गुणात्मक भागीदारी का संवर्धन करना आवश्यक है।

सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि सुलभ, समावेशी और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा समान रूप से उपलब्ध कराने के लिए सस्ती, सुलभ और समतापूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य परिचर्या - इस व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने, समावेशी तथा नागरिक केन्द्रित शासन एवं सच्चे अर्थों में शक्ति सम्पन्न तथा सशक्त राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में सभी कार्य करेंगे। सम्मेलन में यह भी निर्णय हुआ कि सतत विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स) के कार्यान्वयन, निगरानी और विनिर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्वतः स्फूर्त ढंग से कार्य करते रहेंगे तथा पारदर्शी, उत्तरदायी तथा समावेशी शासन के लिए काम करेंगे और सशक्त भारत के निर्माण के लिए कर्य करेंगे। सम्मेलन में जो सभी महिलाए आई थीं, उन्होंने एक प्रकार से यह रिजॉल्यूशन उस दिन पास किया था। इन में महिला समानता, इसकी प्राप्ति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, मैं तो चाहती हूं कि इनका सब को समान रूप से इस अवसर को प्रदान भी करना चाहिए और सम्मान भी करना चाहिए। निर्णय लेने की प्रक्रिया, राष्ट्र निर्माण और जीवन के हर क्षेत्र में विकास कार्यों में महिलाओं की ज्यादा से ज्यादा गुणात्मक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हमें प्रयास भी करना चाहिए और इस सबको करने के लिए इसमें आने वाली बाधाओं को दूर करने के प्रति हम सभी को प्रतिबद्ध होना है।

आज अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में हम सभी लोग, क्योंकि अगर स्त्री शिक्षित होती है, स्त्री सामाजिक बातें समझती है, राष्ट्र निर्माण में आगे होती है, तो कहीं-न-कहीं हम जैसे बोलते हैं पूरा परिवार, पूरा राष्ट्र सम्पन्न होगा और इस दृष्टि से हम सभी लोग इसमें सहभागी होंगे, सभी लोग इसमें सहमति जताएंगे, यह मैं मानती हूं।

आप सभी को फिर शुभकामनाएं।

आज मैं कोशिश करती हूं, अगर ज्यादा से ज्यादा महिलाएं इस विषय में अपने विचार रखेंगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

हेमामालिनी जी आप बोलना चाहती हैं। Do you want to speak on this topic?

SHRIMATI HEMAMALINI (MATHURA): Yes Madam. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Sonia Ji will please speak first.

SHRIMATI SONIA GANDHI (RAIBAREILLY): Madam Speaker, thank you for allowing me to speak on this important day – International Women's Day. I also convey my good wishes to you, my good wishes to all my friends, women Members of Parliament, all the women of India and all the women of the world. Our history is full of examples of women playing central and important roles in all years of life.

Inspired by Mahatma Gandhi, lakhs of women broke with tradition and joined the freedom movement. Way back in August, 1928, when women in many countries were fighting for the right to vote, the Congress Party pledged itself to that right when India became free. When the Constituent Assembly met to give shape to our Constitution, 15 distinguished women made notable contributions to it. Today, we proudly recall them. I have their names but perhaps I would take too long to mention them.

HON. SPEAKER: Those names can be laid on the Table of the House. We will include them.

...(*Interruptions*)

SHRIMATI SONIA GANDHI: I will mention the names. Those 15 distinguished women were Sarojini Naidu, Rajkumari Amrit Kaur, Vijay Laxmi Pandit, Sucheta Kriplani, Hansa Mehta, Renuka Ray, Durgabai Deshmukh, Begum Aizaz Rasul, Purnima Banerjee, Ammu Swaminathan, Dakshayani Velayudhan, Malathi Chaudhury, Kamla Choudhary, Leela Ray and Annie Mascarene.

Today, we also take pride in the fact that we have had a first and only woman Prime Minister Indira Gandhi. We also take pride in the fact that we have had a first woman President Pratibha Patil Ji and a first woman Speaker of the Lok Sabha, Meira Kumar Ji. Over the past six and a half decades, women have made many striking achievements in different fields, which is quite remarkable, keeping and considering the obstacles they have had faced. However, while we applaud these accomplishments, the fact remains that women continue to be victims of oppression and discrimination.

Madam Speaker, it is, thanks to the vision of Rajiv Gandhi that we have mandatory reservation for women in Panchayats and Nagar Palikas. Today, over 40 per cent of the 40 lakh elected representatives in urban and rural local bodies are women. This I believe is nothing short of a revolution. But recent developments are disturbing. On the one hand we celebrate the 125th Birth Anniversary of Dr. B.R. Ambedkar and on the other, in some States, the right to contest elections at local level has been significantly curtailed on the educational grounds.

So, for no fault of theirs, a very large number of rural women, belonging to the Scheduled Castes and Scheduled Tribes, are being denied their basic Constitutional right. I believe this compels our urgent legislative attention.

Madam Speaker, today is an occasion to celebrate but it is also an occasion to look inwards at ourselves as women.

The harsh reality is that the building blocks of discrimination against women lie within the very systems that are supposed to nurture and defend them, namely, the family and the community. Ever so often, women end up, and that too for no fault of theirs, as victims of some traditions. Too often, it is the family, it is the community that opts for sex selection that makes distinctions between male and female children when it comes to food, clothes and education, forces girls into early marriage, demands dowry when sons get married, withholds girls' opportunities for employment and independence and denies them their legitimate share of family property. While there is much in our tradition to cherish and to preserve, we must have the courage to confront these social evils and fight against them. We must, as women legislators, join hands with our male colleagues in a concerted campaign to change the mindset that underlines these practices.

Madam Speaker, the philosophy of this Government is said to be one of Maximum Governance, Minimum Government. I do not quite agree with the Minimum Government part but let that be. On this occasion, I do have serious reservation of problems with the way maximum governance itself is perceived.

Maximum governance is more than just accelerating economic growth. Maximum governance involves expanding space for debate, for disagreement and for the expression of different points of view without inviting retaliation or retribution.

Maximum governance involves giving freedom to civil society, to NGOs and activists groups, often led by women, to carry out campaigns on behalf of those whose voices are seldom heard.

Surely, maximum governance does not mean having double standards in relation to women and their rights.

Surely, maximum governance means protecting, preserving and strengthening our social and communal fabric. Surely, maximum governance is anchored in the deepening of our democratic and liberal values.

Madam Speaker, surely, maximum governance also means giving us, women, our legitimate due, namely, the long awaited Women's Reservation Bill, and I believe, we can expect in you, Madam Speaker, a strong ally for this cause. Thank you.

HON. SPEAKER: We appreciate Hema ji's very nice performance on 'Nari Shakti' on the eve of National Conference of Women Legislators on the 5th of March.

SHRIMATI HEMAMALINI : Thank you, Madam. Happy Women's Day, Madam Speaker and all my colleagues. On this happy occasion of International Women's Day, I seek blessings from all the elders and convey my blessings to all young women.

Today I would like to talk about the positive aspect of women in our society. 'यत्र नार्यस्तु पूयजन्ते रमन्ते तत्र देवता' - जहां नारी की इज्जत करते हैं वहां भगवान भी खुश होते हैं। नारी शक्ति को हम दुर्गा के रूप में, महालक्ष्मी के रूप में शक्ति प्राप्त करने के लिए, धन प्राप्ति के लिए पूजते हैं। लेकिन क्या उनके साथ आज भी अच्छा व्यवहार होता है।

Women are natural home makers. If a woman is respectfully empowered, her house becomes a home. एक बेटी को बहु के रूप में हम अपने घर लेकर आते हैं जैसे एक वृक्ष को अपने घर से उखाड़कर दूसरे घर में ले जाते हैं। उस वृक्ष को पानी देना और प्यार से संभालना बहुत जरूरी होता है, नहीं तो वह सूख जाता है और गिर जाता है। इसी तरह एक बेटी जो बहु बनकर आती है, उसके साथ प्यार और मान-सम्मान के साथ रहेंगे तो, she will make a house.

स्त्री से सृष्टि चलती है, वंश की वृद्धि होती है। स्त्री न होती तो सृष्टि नहीं होती। जिस पेड़ पर बैठे हैं उसी को उखाड़ देंगे, उसी के साथ क्राइम करेंगे तो गिरेंगे और आपके साथ बहुत बुरा होगा, यह आप सबको समझना चाहिए। स्त्री को अपनी बेटी की तरह, अपनी बहु की तरह, अपनी मां की तरह इज्जत देंगे तो जीवन सुखी रहेगा। अगर आप एक सुंदर सा घर बसाना चाहते हैं तो शक्ति को इज्जत देनी चाहिए, नारी की इज्जत करनी चाहिए। कहते हैं कि मानव जन्म ही बहुत अपूर्व है। ऊपर से एक नारी का जन्म लेना बहुत ही सौभाग्य की बात है। हम सब महिलाओं को बहुत अभिमान, गर्व होना चाहिए कि हम नारी हैं। हम ही अगली पीढ़ी को देश के लिए जन्म देते हैं and those children become the wonderful future citizens of the nation.

महिलाएं अपने साथ अच्छे संस्कार लेकर आती हैं। संस्कार स्त्रियां ही दे सकती हैं। Society that nurtures women automatically becomes a cultured society. If a woman is respected in society and nation, she makes a wonderful society and nation. If the world respects a woman, world becomes peaceful and filled with harmony.

हम देख सकते हैं कि दुनिया में बहुत सारी महिलाएं बहुत बड़े-बड़े पदों पर बैठी हैं और कामयाबी भी हासिल कर रही हैं। हमारे देश में भी बहुत सारी महिलाएं पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। ऐसी महिलाओं को प्रोत्साहित करना बहुत जरूरी है ताकि वे भी देश के लिए अपना योगदान दे सकें।

Now, I come to gender equality. Every human being is complete and healthy, if both male and female are balanced. The Chinese also believe in power of Yin and Yan. When we pray we always invoke the mother and father of the Universe. Without women the Universe remains incomplete.

In *Sanatan Dharam* also we worship *Laxmi-Narayan, Shiv-Parvati* and also the Creator, *Bhrma.* He needs the support of *Saraswati.* Without Her, He cannot do any creation.

Today's women are career oriented women, who are creating history by breaking the proverbial glass ceilings all over the world. जहां महिला घर से बाहर जाकर कमाकर लाती है, वही महिला अपने घर को भी बहुत अच्छी तरह संभालती है। Women are natural multi-faceted and multi-taskers. This is called work-life balance. In Mumbai, I have personally seen in the outskirts of Mumbai the women living. They take care of their children. They take care of their husbands. They pack lunch and send them to office. Then, they also take care of their *saas-sasur*. Thereafter, they undertake a two-hour journey to go to the city and work in an office. They come back in the evening and start taking up all the responsibility of the house. She will be the last person to go to sleep. So, I really admire all these women, how much they work. We really get inspired from them.

Women are naturally powerful. इसीलिए उन्हें शक्ति स्वरूपा कहते हैं, जो शक्ति की उपासना करते हैं उनमें और भी शक्ति बढ़ती है। Every girl should be allowed to dream big like every boy so that she can become an achiever in her own right. We should create a balance between male and female, give equal opportunities instead of suppressing women. जहां नारी की इज्जत होती है, वहां दिव्य शक्तियां बढ़ती हैं, जहां नारी का तिरस्कार होगा वहां असुर शक्तियों का बोलबाला होगा, जहां नारी को इज्जत देंगे वहां संपन्नता, सफलता, शांति, प्रेम का वातावरण होगा। नारी को नकारेंगे, दुत्कारेंगे, वहां दरिद्रता, आक्रोश, प्राकृतिक आपदा अपने आप आ जाती है। I would like to conclude with a

quote from my dance ballet by Ravindra Jainji: मैं नारी हूं, सृÂिट का अनुपम रूप हूं, मैं परंपरा की जननी भी हूं तथा उनका निर्वाहन करने वाली भी हूं, संसार मुझ पर मोहित हैं तो इतिहास गर्वित, मुझमें जीवित हैं वह सब नारियां जो अपने आदर्श चरित्र यहां स्थापित करके गई हैं, मैं अतीत भी हूं, वर्तमान भी हूं और आने वाला कल का उत्तरदायित्व भी मुझी पर है, मैं नारी हूं।

माननीय अध्यक्ष : श्री चन्द्र प्रकाश जोशी और श्री सी.आर.चौधरी को श्रीमती हेममालिनी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

मेरा आप सबसे निवेदन है कि थोड़े कम समय में बोलें तो ज्यादा से ज्यादा महिलाएं और कुछ पुरुष प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित कर सकते हैं क्योंकि दोनों से परिवार बनता है। So, you please try to finish in only two to three minutes.

श्रीमती आर. वनरोजा

*SHRIMATI R. VANAROJA Hon. Madam Speaker. I thank you for allowing me to speak about women, on the occasion of International Women's Day. In this august House, I want to make a mention of the Message delivered by our beloved leader Hon. Chief Minister of Tamil Nadu *Puratchithalaivi* Amma.

Great Poet Mahakavi Desiga Vinayagam Pillai said, "It is a great boon to be born as women". To mark this occasion, every year, 8 th March is being celebrated as International Women's Day. The Tamil Nadu Government under the leadership of Hon. Amma has been implementing several welfare schemes aimed at improving the standard of lives of women; to ensure their rights; to mitigate their sorrows; and to ensure the protection of women. Tamil Nadu is a progressive state in every sphere of activity particularly for upliftment of women.

In order to ensure the equality for women, the Government of Tamil Nadu Government under the leadership of Hon. Chief Minister Puratchithalaivi Amma has been implementing several schemes of historic importance. I want to mention some of them. All Women in Tamil Nadu are happy with the successful implementation of several schemes like Cradle Baby Scheme, Chief Minister Girl Children Protection Scheme, All Women Police Stations, Women Commando Force, Kalpana Chawla Awards for women for their courage and daring enterprise, Avvaiyar Award for Women of Excellence, 4 gm gold for the Tirumangalyam along with financial assistance under Marriage Assistance Scheme.

Using the first letter of mother's name as initials; usage of the word *Kudimagal* which is the feminine gender for citizen, Dr. Muthulakshmi Reddy Maternity benefit assistance scheme are some of the welfare schemes which are received very well by all quarters in Tamil Nadu.

A 13 point scheme to protect women against crimes, Women Literacy Scheme aimed at encouraging women's education, Scheme for Continuing Education, Schools and Colleges built in vicinities, Amma Literacy Award for Women Writers are several schemes that are implemented with zeal. Setting up of Self Help Groups (SHGs) for women enabling to uplift their economic status on their own, issuance of Amma Mobile phones to the trainers of these Women Self Help Groups, Industrial Estates specially meant for Women Entrepreneurs, Working Women's Hostels, 6 months maternity leave for women government employees are various other important schemes implemented by the Tamil Nadu Government under the leadership of Hon. Puratchithalaivi Amma.

A scheme to provide mixies, grinders and fans free of cost to homemakers with a view to help them in their kitchen work, providing milching cows and goats free of cost, scheme to provide 10 % subsidy to women members of Women Tailoring Co-operative Union to purchase modern sewing machines and thereby helping to improve their economic status, special schemes for disadvantaged families with women as heads of families, reduction of age of maturity from 20 to 18 in order to avail maturity amount under Girl Child protection scheme are some other welfare schemes of Tamil Nadu government. A scheme to provide sanitary napkins free of cost in order to protect health of women, setting up of women health complexes, 24 - hour maternity health service, scheme to provide weighing scales to children, infants, young mothers, pregnant and lactating mothers, scheme to provide supplementary diet to infant from 6 months to 3 years, pregnant mothers, lactating mothers and teenage girls, separate rooms for lactating mothers in bus stands to feed their infants, are other programmes that are successfully being implemented in Tamil Nadu.

In the year 1994, as per Act, one-third reservation was provided to women in local bodies. Now the reservation has been increased to 50% for women. These are the some of several schemes which will definitely help in improving the standard of lives of women in Tamil Nadu.

Women are forms of knowledge, energy and compassion. I wish to them all the best to create history and win over the world by overcoming all the hurdles in their lives, with confidence and concerted efforts. I once again express International Women's Day wishes to all of you. I am extremely happy to reiterate the Message of Chief Minister of Tamil Nadu Hon. Puratchithalaivi Amma in this august House on the occasion of International Women Day. Thank you.

श्रीमती शताब्दी राय (बीरभूम) : अध्यक्ष महोदया, आज 8 मार्च को वूमैन्स डे है। मेरे घर में जो काम करती है, वह आज भी वही काम कर रही है, लेकिन आज 8 मार्च है। जो औरत रास्ते में, सिग्नल पर बच्चे लेकर भीख मांगती है, वह भी वही काम कर रही है, लेकिन फिर भी आज 8 मार्च है। जो ससुराल डॉवरी नहीं देने पर अपनी बहू को मेंटेली और फिजिकली टार्चर करती है, वह आज भी वही काम कर रही है, लेकिन फिर भी आज 8 मार्च है। मैंने बहुत सारे लोगों से बात की कि 8 मार्च का मतलब क्या है और क्यों यह स्पेशल है? कोई बोलता है कि वूमैन स्पेशल है, इसलिए आपको रिस्पैक्ट करते हैं। कोई यह कहता है कि वूमैन वीकर है, सोसायटी में नीचे है इसलिए उन्हें सपोर्ट देने के लिए वूमैन्स डे मनाया जाता है। मैं दूसरे कारण पर विश्वास करती हूं। लेकिन जो भी जेंडर डिस्क्रिमिनेशन है, वह तब तक है जब वह सोसायटी में आते हैं। अगर कोई किसी मां से पूछे कि जो बच्चा वह दस महीने दस दिन तक अपनी कोख में रखती है, अब वह चाहे लड़का हो या लड़की, उसमें क्या पेन अलग होता है? क्या उसका अनुभव अलग होता है? उसका स्ट्रैस या टैंशन क्या अलग होता है? क्योंकि जब तक बच्चे की दुनिया, देश और गांव उसकी कोख होती है, तब तक कुछ भी नहीं है। जब बच्चा पैदा होता है तब यह मेल डोमिनेटेड सोसायटी उसको अलग करती है। लेकिन तब तक यह डिफरेन्शिएट चलेगा जब तक हम लोग इकोनॉमिकली इक्वल नहीं होंगे। अब महिला घर में चौबीसो घंटे काम करती रहती है लेकिन उसकी इनकम नहीं है, इसलिए वह कुछ नहीं करती। लेकिन जब हसबैंड आठ घंटे इंजीनियरिंग करके इनकम कमाता है, तो वह सब कुछ है। इसके लिए इनकम ही एक ऐसी चीज है जिसमें आप इक्वल बन सकते हैं और उसके लिए एजुकेशन जरूरी है। जब तक हम एजुकेशन नहीं देंगे तब तक इनकम भी नहीं होगी और हम इक्वल नहीं हो पाएंगे। अभी जो एड बनती हैं, वूमेन को हमेशा एड में दिखाते हैं, प्रोडक्ट यूज़ करने में दिखाते हैं। जैसे टीवी, फ्रिज, गाड़ी की एड होती है तो कहते हैं कि यह लीजिए, यह आपके लिए बैस्ट है, इससे पेट्रोल बचेगा, इलैक्ट्रिसिटी बचेगी, लगातार यही बोलते हैं। लेकिन लड़की बचाओ, बेटी बचाओ, इस तरह से प्रोडक्ट बना दिया। अभी भी नारी वही प्रोडक्ट है जिसे फ्रिज, टीवी, गाड़ी के साथ तोला जाता है। अगर कहेंगे कि बस में वूमेन का स्पेशल सीट चाहिए, हमें नहीं चाहिए, हम बस चलाना चाहते हैं। अगर कहेंगे कि लेडीज़ फर्स्ट है, हम कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहते हैं। अगर कहेंगे कि पांच

लाख इनकम करने से टैक्स फ्री होगा, नहीं चाहिए, हम पांच करोड़ इनकम करके पूरा टैक्स देना चाहते हैं।

महोदया, अब मैं एक कहानी सुनाना चाहती हूं। एक पांच साल की बच्ची ने डैडी से कहा कि फ्रीडम किसे कहते हैं। डैडी ने कहा कि आप जो चाहे बोल सकें, जो चाहे कर सकें, किसी से आंसरेबल नहीं हों, जो भी बोलेंगे, जो भी कहेंगे अपने मन से करेंगे, यही फ्रीडम है। पांच साल की बच्ची ने कहा कि डैडी, मुझे भी फ्रीडम मिलनी चाहिए तब डैडी ने कहा कि तुम बच्ची हो, अभी फ्रीडम लेकर क्या करोगे, जब बड़ी हो जाओगी फ्रीडम अपने आप आ जाएगी, बड़े होने से ही फ्रीडम मिलती है, बड़े होने से ही फ्रीडम अपने आप आ जाती है। तब बच्ची ने पूछा- डैडी, मां कब बड़ी होगी? हमारी सोसाइटी में मां बड़ी नहीं होती इसलिए अभी भी हम इक्वेलिटी की बात कहते हैं। मां को बड़ा होना चाहिए, उसे बड़ा होने दीजिए तब इस तरह की डिकसशन की बात ही नहीं होगी।

महोदया, मैं एक बात कहते हुए कन्कलूड करती हूं, मैं पर्सनली यह दिन नहीं मानती क्योंकि मुझे साल भर वूमेन्स डे चाहिए। मैं तब 8 मार्च को वूमेन्स डे सेलीब्रेट करूंगी जब 9 मार्च को पुरुष दिवस होगा क्योंकि हम इक्वेलिटी में बिलीव करते हैं।

SHRIMATI PRATYUSHA RAJESHWARI SINGH (KANDHAMAL): I thank you Madam Speaker, for giving me this opportunity to speak on one of the most crucial topics of Bride Trafficking in India on Women's Day.

As we all know, a major part of women go missing every year. According to Global Voices approximately 90 per cent of the 2,00,000 humans trafficked in India every year are victims of inter-State trafficking and are sold within the country.

Bride trafficking is forced sale, purchase and resale of girls and women in the name of marriage. Girls and women are kidnapped or lured into bride trafficking and sold, raped and/ or married off without their consent only to end up as slaves and bonded labourers at the mercy of the men and their families, who have bought them. The States of Haryana, Punjab and Rajasthan are major destinations of trafficked brides. According to a six year long analysis conducted by Empowered People, girls from West Bengal, Bihar, Odisha, Assam, Jharkhand etc., are trafficked.

Although a trafficked bride is technically married to only one man in the family, the man's brothers or other male relatives see her as a property to be shared. Children born to these mothers are not accepted in the community and are looked down upon by peers. On the legal front, this form of trafficking and slavery is not considered under the Bonded Labour System (Abolition) Act, 1976 nor is marital rape a crime in India.

Bride trafficking is not just a woman rights issue but a human rights issue. Bride trafficking is not a marriage. It is a lethal combination of the darkest form of domestic slavery, bonded labour and sexual slavery. Bride trafficking is the ultimate dehumanization of women.

I hope, we will be able to give justice to these voiceless and helpless victims.

माननीय अध्यक्ष : अगर ये सब दो मिनट बोलेंगी तो मैं आप सबको समय दे दूंगी।

श्रीमती भावना पुंडलिकराव गवली (यवतमाल-वाशिम) : माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस महिला दिवस के अवसर पर बोलने का मौका दिया है। मुझसे पूर्व वक्ताओं ने भी यहां पर अपनी अपनी बात रखी है। शताब्दी जी ने बहुत अच्छी बात यहां पर रखी है। मैं दो-तीन प्वाइंट यहां पर रखना चाहूंगी जो हमेशा मेरे मन में रहते हैं। एक तो यह है कि 50 प्रतिशत महिलाएं गांवों और शहरों में आरक्षण की वजह से काम कर रही हैं। लेकिन जब हम देखते हैं कि महिला सरपंच बनकर या जिला परिषद सदस्य बनकर जब वे हमारे पास आती हैं तो उनके पति या उनके भाई या उनके पिताजी उनके साथ में रहते हैं और वे कहते हैं कि जो भी है, आप हमसे चर्चा करिए।

मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि उसे आरक्षण मिलने के बाद भी उसको किसी का सहयोग लेकर काम करना पड़ रहा है। उसे हम काम क्यों नहीं करने देते? अगर उन्हें सरपंच पद मिला है, अगर वे जिला परिषद सदस्य बनी हैं, अगर वे एम.एल.ए. या एम.पी. बनी हैं तो भी ऐसा क्यों होता है कि आज भी उसे कमज़ोर माना जाता हैं? आज भी उसकी तरफ देखने का जो नज़रिया है, वह बदला नहीं है। यह एक बात है जो हमेशा मेरे दिमाग में रहती है।

दूसरे, गांवों में हमारी महिलाएं पढ़ी-लिखी कम हैं। आज भी उन्हें शिक्षा नहीं मिल पा रही है। शहरों में मिल सकती है और मिल रही है लेकिन गांवों में उन्हें शिक्षा नहीं मिल पा रही है। जब इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाली लड़कियां हमारे पास आती हैं और कहती हैं कि फलां फलां बैंक से मुझे एजुकेशन लोन लेना है तो उसके लिए मुझे सपोर्ट चाहिए तो हम उसे खुशी-खुशी सपोर्ट करते हैं लेकिन मेरी आपके माध्यम से सरकार से अपील है कि 33 प्रतिशत अगर हम ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन में महिलाओं को आरक्षण दें तो वे सक्षम बनेंगी। वे पढ़ेंगी और आगे बढ़ेंगी, जैसा हम कहते हैं कि "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।" बेटी के 12वीं तक पढ़ने से कुछ नहीं होगा। उसे हमें पूरा सपोर्ट देना होगा। अगर हमें उन्हें पूरा सपोर्ट देंगे तो वे आगे बढ़ेंगी और वे अपने पैरों पर खड़ी होंगी।

जो बात यहां पर शताब्दी जी ने कही है कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहिए। जब तक वे आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होंगी, तब तक उन्हें वह मान-सम्मान नहीं मिलेगा क्योंकि वह घर में कमाकर नहीं लाती है, इसलिए उनको मान नहीं मिलता। अगर वे कमाकर लाएंगी तो सब लोग उन्हें सम्मान देना शुरु करेंगे।

जब मैंने देखा कि महाराष्ट्र के शनि मंदिर की बात आई। यहां पर हमारे सांसद आधलराव जी हैं, वे मुझे बोल रहे थे और मैंने कहा कि वह भी एक मुद्दा है। महिलाओं को दर्शन लेने के लिए बाधित किया जाता है कि वे मंदिर में जाती हैं तो मंदिर में नहीं जा सकेंगी, वे वहां दर्शन नहीं कर सकतीं। ऐसा क्यों? वैसे हम ईक्वैलिटी की बात करते हैं। हम मंदिर में जाकर दर्शन क्यों नहीं कर सकते? यह भी एक बहुत बड़ा मुद्दा है।

वॉट्स-अप में मैंने एक पोस्ट देखी। उसमें यह था कि एक महिला रोटी बना रही है और जो छोटे छोटे ड्रॉअर्स होते हैं जहां पर हम बर्तन रखते हैं, उस पर बच्चे को बिठा देती हैं। मैं देखती हूं कि वह महिला रोटी भी बना रही है और बच्चे को भी संभाल रही है। महिलाएं छोटी-छोटी चीजों को लेकर बहुत अच्छे तरीके से मैनेजमेंट कर सकती हैं तो देश की राजनीति में और महिलाएं बढ़ेंगी, देश के बाकी के कामकाज में महिलाएं आगे बढ़ेंगी तो देश और सक्षम होगा और अधिक तेजी से प्रगति करेगा।

यहां पर मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगी कि महिला आरक्षण पर बहुत बार सोनिया जी भी बोली हैं, जब से मैं यहां पर आई हूं, यह विषय बहुत सालों से चल रहा है और आपके आशीर्वाद से मैं यहां पर बोल भी रही हूं। हम यहां पर बहुत सालों से देखते हैं कि आरक्षण का इश्यू है। लेकिन उस पर कुछ होता नहीं है।

हमारे बालासाहेब ठाकरे जी ने कहा था कि महिलाओं का आरक्षण पार्टी बेसिस पर होना चाहिए, पार्टी तय करे कि कौन सी महिला संसद में आएगी, कौन सी महिला एम.एल.ए. बनेगी, कौन सी महिला कहां जाएगी। पार्टी तय करेगी कि महिला हमारी किस तरीके से काम करेगी। इसलिए मैं समझती हूं कि यह जो इश्यू है, जैसा शताब्दी जी ने कहा, शताब्दी जी ने बहुत सुंदर कहा और इसीलिए मैं बार-बार उनको कोट कर रही हूं। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपकी सहेली हैं।

श्रीमती भावना पुंडलिकराव गवली: मेरी बहुत अच्छी सहेली हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगी कि जो भी निर्णय महिलाओं के लिए लेने हैं, मुझे लगता है कि सरकार को थोड़ा आगे बढ़कर लेना जरूरी है। डॉमैस्टिक वॉयलेंस बिल को हमने वर्ष 2005 में मंजूरी दी थी लेकिन आज क्या है? गांवों में हम क्या देखते हैं? महिलाओं को कोई सपोर्ट नहीं मिलता है और महिलाओं को कानून का भी पता नहीं है। कोशिश कर हल निकलेगा आज नहीं तो कल निकलेगा, अर्जुन सा निशाना साध जमीन से भी पानी निकलेगा, जिंदा रख दिल की उम्मीदों को समुद्र से भी गंगाजल निकलेगा। कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की जो है आज थमा-थमा सा कल वह चल निकलेगा।" इसके साथ-साथ मैं सभी को महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपनी बात समाप्त करती हूं। धन्यवाद।

SHRIMATI KAVITHA KALVAKUNTLA (NIZAMABAD): Thank you so much and once again a very-very Happy Women's Day to all of you.

Madam, in the beginning I would like to thank you profoundly for taking an initiative that nobody else till date has taken. You have given us a huge platform while initiating the National Conference of Women Legislators for two days. You created a platform and the hon. President, hon. Vice President and the hon. Prime Minister Ji had attended the Conference for two days, not one day, and they have increased the gravity and dignity of this whole programme.

Madam, I have seen that the MLAs who have attended this Conference have been very spirited. They have a renewed vigour. When they go back to their constituencies they can carry the spirit forward and can encourage many more women who are actually working at the grass root levels; it could be ZPTCs, MPTCs or MPPs. Most of them have promised, Madam - whatever you have initiated today here - that they want to go back and do the same thing in their constituencies. I am sure this has connected thousands and lakhs of women across the nation and I thoroughly congratulate you for taking this wonderful initiative.

Madam, I would very proudly like to say कि ऐसा पहली बार लोक सभा में हुआ है कि आपने ऐसी एक कांफ्रेंस शुरू की है। यह भी इसलिए हुआ है क्योंकि एक महिला स्पीकर पद पर बैठी हैं। जब एक महिला स्पीकर पद पर बैठती है, जब एक महिला निर्णय लेने की पोजिशन पर बैठती है तो ऐसे अच्छे निर्णय महिलाओं के पक्ष में होते हैं। आज हम जितने भी राजनीतिक दल यहां हैं, हम सभी को तय करना है कि महिलाओं को कैसे उच्च स्तर पर पहुंचाना है ताकि देश भर की महिलाओं को फायदा मिल सके।

महोदया, हमारे देश में आज से नहीं बल्कि वर्ष 1930 से जब से नमक सत्याग्रह आंदोलन की बात थी, गांधी जी ने 70 सदस्यों की टीम बनाई थी and in his initial team he did not include one woman member. बहुत-सी महिलाएं जो पहले से ही स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा ले रही थीं, उन्होंने प्रोटेस्ट किया कि हम भी आपके साथ चलेंगी और क्यों आप हमें अपने साथ नहीं लेकर जाते हो। सरोजिनी नायडु जी ने आवाज उठाई थी और वे गांधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलीं। स्वतंत्रता संग्राम में हजारों महिलाओं ने हिस्सा लिया था। महिलाओं ने सभी आंदोलनों में पार्टिसिपेट किया था लेकिन राजनीतिक आंदोलन में उन्हें पीछे धकेले जाता है। हमारा जो पहला चुनाव हुआ था, उसमें सिर्फ पांच परसेंट महिलाएं सांसद थीं। लेकिन आज यह संख्या बढ़ते-बढ़ते 12 परसेंट हो गई है। मैं इसलिए यह कहना चाहती हूं कि जब आपकी जैसी महिला पावरफुल पोजिशन पर होती है, जब मैडम सोनिया गांधी जैसी महिला पावरफुल पोजिशन में होती है तो हम लोगों को हैल्प कर सकती है। She had helped us in the formation of Telangana. क्योंकि वे महिला हैं। हमें लगता है कि उन्होंने हमारा दर्द समझा है और हमारी मदद की है।

मैं एक बात और कहना चाहती हूं जो कि राजनीतिक दृष्टि से नहीं है, आरक्षण की दृष्टि से नहीं है कि महिलाएं बहुत मुश्किल में हैं। मुझे लगता है कि गरीबी के ऊपर, निरक्षरता से ऊपर अगर हम चुनकर आए हैं अगर हम सही में फोकस करें तो हमारे देश की महिलाएं ऊपर उठ सकती हैं। मुझे इतना ही कहना है कि हमने अपने बेटों को पढ़ाया है और पुरुषों की साक्षरता दर 84 परसेंट से ऊपर है। मुझे लगता है कि इससे देश की हालत में कुछ बदलाव नहीं आया है। अब हम बेटियों को पढ़ाना शुरू करते हैं और मुझे विश्वास है कि इससे देश में जरूर बदलाव आएगा। महिलाओं के साथ बर्ताव की बात मैं बताना चाहती हूं क्योंकि मैंने बहुत-सी महिलाओं से बात की है। वे कहती हैं कि शादी के बाद ऐसा लगता है कि एक पिंजरे से वे दूसरे पिंजरे में आ गई हैं। पहले माँ-बाप और भाई का हक रहता है और शादी के बाद सास-ससुर और पति का हक रहता है। महिलाओं की जिंदगी में कोई बदलाव नहीं दिखाई देता है। उच्च स्तर की महिलाओं के साथ भी ऐसा ही होता है फर्क इतना होता है कि ग्लास सीलिंग होती है, जो दिखाई नहीं देती है लेकिन वे पिंजरे में ही होती हैं। जो बाउंडरीज दिखाई नहीं देती हैं, इन्हें तोड़ने में हमारी जैसी सशक्त महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

मैं अंत में इतना हीं कहना चाहती हूं कि - निगाहों में मंजिल थी गिरे और गिर कर संभलते रहे, हवाओं ने बहुत कोशिश की मगर चिराग आंधियों में भी जलाते रहे। आप जैसी महिलाएं अगर हमें एनकेज करेंगी तो पक्का हम ऐसे चिराग जलाते रहेंगे और देश को रोशन करते रहेंगे।

13.00 hours

*SHRIMATI P.K.SREEMATHI TEACHER (KANNUR): We are thankful to you, Madam Speaker for giving us an opportunity to our women members to speak in the Lok Sabha today. Speaker Madam and our respected Prime Minister I am sure had taken this initiative on behalf of the Government. Personally, I am happy, because even those members who did not get an opportunity even to raise a single question, has got an opportunity to speak. One of the main yardsticks to measure the development of our country is to assess the status of our women. If you talk in general about the status of women, they are socially, educationally, economically and politically backward.

We have several women stalwarts about whom we can be proud. We remember with pride, the name of Jhansi ki Rani. She had fought against the British rule and Subhas Bose's INA had a women's regiment. Captain Lakshmi was the chief of that women regiment. In Kerala, we had Unni Archa, a women who took up arms and fought and defeated her enemies, even as her husband could not face them.

We have heard about several brave women. Respected Sonia ji, remembered thousands of women who stood alongwith the men and fought against British imperialism. But after sixty eight years, when we analyze the status of women in society, it is not a matter of pride, but one of shame. Look at this Lok Sabha itself. Even after sixty eight years, we have only 12% representation for women. Certainly I can see, a better representation of women in the treasury benches, and it seems the BJP Government has shown a positive attitude to women. But 66 members, or twelve percentages, is it sufficient? African and Latin American countries have higher representation of women in their legislative bodies. So a low representation of women in governing and legislative bodies,â€¦â€¦

HON. SPEAKER : Yes.

SHRIMATI P.K.SREEMATHI TEACHER: Kindly give me some more time madamâ€¦.. so, low representation of women does not reflect the progress of a nation. Madam, Afghanistan has twenty eight percentage of women representation. That Afghanistan, which has strong Taliban presence, has 28 percentage of women representation. In Kerala, we have only five percentage of representation women in our state legislative assembly. This is not a matter, that can make us proud. Madam, why is if that we cannot pass the Women's Representation Bill in the Lok Sabha? That bill was passed in the Rajya Sabha, six years ago. Why are we delaying that bill in the Lok Sabha? I am sure, that while the Hon. Speaker Madam is on this chair, during the tenure of this very Government; the Women's Representation Bill, which has already been passed in the Rajya Sabha can also be passed in this House as well. We can thus ensure that women get 33.3 percentage seats in this House.

Madam, another point. The BJP who was then the opposition party, what was their stand? They said, we will support Women's Representation Bill, but we need mutual consent. Madam I am telling, put the Women's Representation Bill for vote. We can see who are with the women, and who are opposing us. We can distinguish our friends and foes then.

Madam, I don't think just to allow women members to speak is not enough. So, my view is that, socially economically women are still lagging behind. So women should get an opportunity in governance. If given an opportunity women can fare so well. This has been amply proved by respected Kiran Kher, Meenakshi Lekhi, they speak so well. But they should be given opportunities. Why are they not given? By legislation we should ensure that women get adequate representation and opportunities. So to improve the present circumstances we should pass the Women's Representation Bill. We want to know, whether this time with the initiative of the present Government, Women's Representation Bill can be introduced for passing and adoption? Can we have an assurance on the part of the Government that the bill will be introduced for passing during this term? So on this day, the International Women Day, the Parliamentary Affairs Minister should give us an assurance to this effect. If the Minister can give us such an assurance, I can agree that this opportunity given to us to speak, has indeed been purposeful. I thank, Madam Speaker for kindly allowing me time to speak at length.

Thank you.

SHRIMATI SUPRIYA SULE (BARAMATI): Madam Speaker, thank you very much. I may sound a bit cynical but 364 days is not Women's Day and one day in a year we are celebrating Women's Day. You started a new trend of building a resurgent India. That was the topic of our Conference which you led for every women legislator in India. We had two days of very interesting topics that we discussed. When we were planning this Conference I still remember your words of wisdom that we do not want to discuss only women issues, social issues, crime against women, but we want to bring women in the forefront of India. That is going to the real resurgent India. You focused the entire Conference on finance, women's rights and gender equality. I think, what we really want to make, bring in the change, is to making sure that every women gets equal right and the resurgent India has to be about equal rights for men or women. So, what Shatabi said is very true that we do not want one day of Women's Day where we all get an equal opportunity because we all represent men and women here. We even have male voters. So, we owe it to both the genders. I think, the India that we dream of which are about having equal rights for all. That is what even our Constitution says. I am proud to say that I was born in a family and come from a State where we have the biggest reformers. Madam Speaker, you were also born in that State. It makes me really proud to say that all the women issues that first came up in this country were in Maharashtra, be it B.R. Ambedkar, be it Shivaji Maharaj, Sahu Maharaj. This is all the legacies of Mahatma Jyoti Phule and that is the reason why we all are here today. So, these are the proud sons of the soil. I am really happy today that not only women are speaking but some of our male Members are going to speak in favour of us. I think that is what really is the beginning of a new change.

Madam Speaker, I would definitely like to speak about a couple of women which I really think need recognition. We keep talking about gender equality. I would talk about three of my women colleagues who are always in the House are exceptional but they are different. They do not come from any political background but have made a mark for themselves. One out of that, I must say with high regard, is Ms. Rama Devi. Ms. Rama Devi became a widow at the age of 40. She had five children. Till today she has not got justice for her husband's death. She won the case in the High Court but she is still fighting the case in Supreme Court because the murderers of her husband are still there. I think, we need to celebrate, not all of us women but women like Rama Devi need recognition because this is the brave daughter of India; this is what gender equality. She has not broken down. She has become a Member of Parliament again and again. She has fought for rights, not just for herself but brought up exceptionally well her children. All her five children are professionals and make India proud, not just in India her son-in-law also serves in the Indian Forest Service. So, I think, she needs a round of applause and we are so proud of Shrimati Rama Devi. We get energy from her.

Shrimati Teacher, who is sitting here, again comes from no political background. She is a teacher here. We all take so much inspiration from her. Her father, mother and husband are all teachers today. What she is leading from the front is to make a change and the only way we can make change and give equal rights to every human being is through good care, education and health care.

So, we need leaders like them, whether man or woman, to bring in the change that we are all looking for.

I take this opportunity to congratulate all these people who are strong, energetic and powerful not in the sense of having a Mantralaya but power and will to create a make a difference. This is the difference we want.

SHRIMATI MEENAKASHI LEKHI (NEW DELHI): Firstly, I want to congratulate everyone present in the House and everyone in the country. आज महिला दिवस के उपलक्ष में आप सबको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। 25 सितम्बर, 2015 को एसजीडी यूनाइटेड नेशंस ने घोषित किये और उसका पांचवा लक्ष्य, वह लिंग समानता यानी जेंडर इक्वेलिटी और वूमन एम्पावरमैन्ट यानी महिला सशक्तिकरण चिह्नित किया गया। ये सब मिलेनियम डैवलपमैन्ट गोल से निकले थे और मिलेनियम डैवलपमैन्ट गोल से निकले हुए इस दस्तावेज को "Future, We Want" का शीर्षक दिया गया। दि फ्यूजर वी वांट इज वैरी एपेरेन्ट। हमें कैसा भविष्य चाहिए, यह सबके भाषणों में आ चुका है। हमें ऐसा भविष्य चाहिए, जहां डिस्क्रिमिनेशन न हो, कोई विशेषाधिकार की मांग इस सदन से नहीं उठी है। बल्कि इस सदन की तरफ से एक आशाओं भरा भविष्य यदि मैं कहूं तो एक बहुत छोटी सी आशा है और वह यह है कि सुरक्षा और समानता का अधिकार महिलाओं को दिया जाए और जब एसडीजी का विषय आता है तो आप चाहें इस देश का इतिहास उठाकर देखें, चाहे वर्तमान देखें या भविष्य देखें तो आप पायेंगे कि भविष्य की प्राप्ति के लिए अगर हम अपने आदर्शों को देख पायें तो हमें पता चलता है कि मातृशक्ति को इस देश की राष्ट्र चेतना का आदर्श प्राप्त हुआ। वह आदर्श चाहे वंदेमातरम् हो या भारतमाता हो, ये दोनों शब्द ऐसे हैं, जिसने इस राष्ट्र की चेतना को जगाया और राष्ट्र की चेतना को जब जगाया तो वहीं पर हमारे उप-राष्ट्रपति जी का भाषण मुझे याद आता है, जिसे मैं आपके समक्ष कोट करना चाहती हूं। उप-राष्ट्रपति जी ने आपके द्वारा आयोजित कांफ्रैंस में कुछ शब्द कहे गए थे और उन्हीं शब्दों को मैं दोहराना चाहती हूं।

> "A closer look at the participation of women parliamentarians lends weight to the notion that most, though not all, only cover issues related to women. This also seems to be sustained by data on their membership of Parliamentary Committees

though the responsibility for this state of affairs is to be shared by party leaderships who, in the final analysis, do the nominations. A few instances sustain this impression. There are just two women members in three Financial Committees out of their total strength of 74 members. While the Committee on Estimates has two women members from Lok Sabha, there is none in the Committees on Public Accounts and Public Undertakings from both Houses.

The Departmentally-related Standing Committee on Finance does not have a single woman member, while the Committee on Railways has only one. The Committee on Home Affairs has got two women Members whereas the Committee on Defence has four. In all, there are seven women Members in these four Committees out of their total strength of 124 members, thus constituting approximately six per cent. The thirty Member Joint Committee on Insolvency and Bankruptcy Code, 2015 has only one woman Member.

Even the Committee on Security in Parliament Complex does not have any woman Member other than the Speaker as its chairperson.

In contrast, however, the Joint Committee on Empowerment of Women has 28 women Members out of the total strength of 30 Members, constituting a whopping 93 per cent."

माननीय अध्यक्ष : आप कहना क्या चाहती हैं, वह कहिये, आप कमेटियों में मैम्बर्स बढ़ाने के लिए बोलिये, इतना समय नहीं है।

श्रीमती मीनाक्षी लेखी : स्पीकर महोदया, यह आंकड़ा सदन के समक्ष रखना अनिवार्य था और मैं इसलिए यह नहीं कह रही हूं कि All this is coming out of some kind of malice towards women. But I am sure that is just an oversight. On this Women's Day, let us do this correction and let us pass this resolution in this House that this correction needs to be carried out and adequate women representation in all the Standing Committees and Select Committees should be there. If we really want to attain sustainable development, whether it is climate change, education, health, etc., is unachievable if we do not allow women participation in all the Committees across the board.

श्रीमती रंजीत रंजन (सुपौल) : अध्यक्ष महोदया, आज महिला दिवस पर हम सब लोग चर्चा कर रहे हैं। मैं शताब्दी जी और भावना जी की बात से सहमत हूँ एवं पक्ष व विपक्ष की सभी महिलाओं से भी सहमत हूँ क्योंकि हम सब महिलाएं हैं और महिलाओं के दर्द को समझते हैं। मैं एक बात कहना चाहूंगी कि "सो क्यों मंदा आखिए, जित जमे राजान। " यह एक माँ और महिला के बारे में गुरू नानक देव जी ने कहा है। प्रधान मंत्री जी ने छह तारीख के अपने भाषण में कहा कि किसको आप सशक्त बनाने की बात कर रहे हैं? वह ऑलरेडी सशक्त हैं और बहुत सारे सशक्त लोगों को उन्होंने दिया है। बहुत सारे सशक्त बेटे हमने दिए, हम लोगों ने महान लीज़ेंड दिए, अब उससे आगे बढ़ने का वक्त है। हम लोग अब यह चाहते हैं कि महिलाएं बोल सकें कि आपने बहुत सारी सशक्त महिलाएं दीं, अब हम चाहते हैं कि पुरूष हमारे पीछे खड़े हो कर हमारी प्रेरणा बनें कि आपने बहुत सशक्त महिलाएं इस संसद में दी हैं।

सारी मीडिया में पांच तारीख से सशक्तिकरण का मामला शुरू हुआ तो सारी मीडिया एक ही बात पूछ रही है कि महिला सशक्तिकरण की बात कर रहे हैं, क्या महिला रिज़र्वेशन बिल पास होगा? मैं पूरी संसद से पूछना चाहती हूँ, हर सदस्य से पूछना चाहती हूँ कि क्या सिर्फ एक रिज़र्वेशन ही महिला को सशक्त करने का सॉल्युशन है? मेरे माँ-बाप ने मुझे ऐसे पाला कि मुझे लड़के और लड़की में फर्क नहीं नज़र आता है। मैं यह जरूर कहना चाहूंगी कि रिज़र्वेशन एक पार्ट हो सकता है, लेकिन जब तक हम पैसे कमाने वाली नहीं बनेंगे, जब तक हम शिक्षा नहीं पाएंगे, जब तक परिवार में हमें यह नहीं सिखाया जाएगा कि यह लड़का है यह लड़की है, तब तक रिज़र्वेशन की बात करनी बेइमानी है। मैं एक बात और कहूंगी, रिज़र्वेशन आना चाहिए, कल मीडिया पूछेगा कि अरे आपकी पार्टी ने तो कहा था कि आना चाहिए। मैं भी कहती हूँ कि आना चाहिए लेकिन हम जैसों के लिए नहीं, बल्कि उन महिलाओं के लिए आना चाहिए जो गांवों में सशक्त हैं। ऐसा न हो कि ऐसा रिज़र्वेशन आए कि किसी की बेटी आ जाए, किसी की बहन आ जाए, जो यहां पर हैं, वही आ जाएं, लेकिन जिनको हमें सशक्त करना है, वह इस सदन में आ ही न पाएं।

एक दिन एक बात मेरे दिल को छू गई। मेरी बेटी और बेटा एक दिन बैठे हुए थे। मैंने बोला बेटा! पानी ले कर आओ। दो बार बोला, तीन बार बोला दरवाज़ा बंद कर आओ। मेरी बिटिया छठवीं कक्षा में पढ़ती है और बेटा कॉलेज में है। मेरी बिटिया ने पूछा कि ममा! जब भी ऐसी बात होती है तो आप मुझे क्यों बोलते हो? भईया को क्यों नहीं बोलते हो? मुझे हर्ट हुआ। यह नहीं कि मैं नहीं चाहती हूँ कि लड़के और लड़की में फर्क नहीं हो। हमारी परंपरा और संस्कृति ऐसी बना दी गई है कि पुरूष चाहते भी हैं, लेकिन उनकी सोच में यह बिठा दिया गया है कि हम लड़के हैं। उस दिन के बाद जब भी कोई काम होता है तो मैं पहले बेटे को बोलती हूँ। मेरा बेटा बोलता है कि मैं बताऊंगा कि यहां तो लड़कों के साथ डिस्क्रिमिनेशन है। I proud my home. मैंने कहा कि मुझे गर्व होगा कि मेरा बेटा ऐसा बोलेगा कि यहां पर बेटियों की ज्यादा इज्जत होती है।

मैं एक-दो बात और कह कर अपनी बात को खत्म करना चाहूंगी। हम बहुत सारी बातें कर रहे हैं, रिज़र्वेशन की बात कर रहे हैं, यह एक पॉलिटिकल मुद्दा है। हम यहां पर 12 प्रतिशत हैं। यदि हम 12 प्रतिशत महिलाएं यह प्रण कर लें कि अगली बार हम तो चुनाव जीतेंगे ही, एक और महिला को प्रेरित करते हुए सदन में ले कर आएंगे तो हम खुद 24 प्रतिशत हो जाएंगे, हमें भीख मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं उन पैरेंट्स को सल्युट करती हूँ जिन्होंने अपने घर में अपने बच्चों को लड़के-लड़की का भेदभाव नहीं सिखाया। मैं अपने पैरेंट्स को सैल्युट करती हूँ।

अंतिम बात मैं कहना चाहती हूँ कि मेरे मन में एक साल से एक चीज़ का संशय था। मैं बाइक चलाती हूँ, साइकल चलाती हूँ, मोटर साइकल चलाती हूँ और मन में था कि मैं हर जगह चलाती हूँ तो पार्लियामेंट क्यों नहीं आ सकती हूँ। पता नहीं मीडिया कैसे विहेव करेगी, पता नहीं लोग कैसे विहेव करेंगे? आज मैंने तय किया कि आज इस परंपरा को तोड़ना है। शायद यह मेरा भय है, शायद मैं कंज़र्वेटिव हो रही हूँ। जैसे मेरे पैरेंट्स ने मुझे पैदा किया, जैसी सोच दी, शायद मैं उससे अलग हट रही हूँ। मैं एक मैसेज देने के लिए आज बाइक से आई कि तोड़ो उस आज़ादी को कि जो छुप-छुप के करना पड़ता है कि सदन है, हम पॉलिटिशियंस हैं। हम पॉलिटिशियंस हैं तो क्या हम आज़ाद नहीं हैं? क्या हमको खुश रहने का हक नहीं है? जैसे, जिस मर्ज़ी से खुशी मिले, हम वह करने का भी अधिकार रखते हैं और इसको छुपा कर नहीं करना है। पूरे देश को बताओ कि हम किस तरह की महिला हैं, अगर हम गाँव में जाकर साड़ी पहन सकते हैं तो हम कंधे से कंधा मिलाकर आपके साथ मोटर साइकिल भी चला सकते हैं, नौकरी भी कर सकते हैं और आपके साथ जाकर बॉर्डर पर लड़ भी सकते हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Thank you, Madam Speaker, for giving me this opportunity. As I listened to my eloquent women colleagues speak today, my mind went back to the `Zero Hour' 20 years ago in 1996 when my mother, Shrimati Krishna Bose got up and demanded the passage of the Women's Reservation Bill. That was 20 years ago. When she saw that there was some resistance to that Bill, she introduced a Private Member's Bill in 2000, offering a very simple amendment to the Representation of People Act which would have required every registered and recognized political party to nominate at least 40 per cent women in each State. I appeal to you Madam Speaker that one way or another, please ensure that women have just representation in Lok Sabha in the future.

Sonia Gandhiji in her beautiful statement has already paid tribute to the women who took part in Gandhian Satyagraha. Madam Teacher has already mentioned about Rani of Jhansi and the women, very often very poor women working in rubber plantations who fought in the Rani of Jhansi regiment of the Indian National Army.

I would simply want to add a tribute to the women revolutionaries like Pritilata Waddedar of the Chittogong Armoury Raid and Kamaladevi Chattopadyay who went abroad, and there in the United States – she was the first to refuse to give up her seat in a train, long before Rosa Parks did the same thing on a bus. These are the women whom we should remember and take as our inspiration.

I wish to tell my women colleagues that because my name ends in an `a', I often get letters addressed to –Ms. Sugata Bose. I never object

to that. Especially on this 8th of March, I want to say that we will stand in solidarity with you, and fight shoulder to shoulder with you to end gender discrimination in our country once and for all. Thank you, Madam Speaker.

SHRIMATI KOTHAPALLI GEETHA (ARAKU): Thank you, Hon. Speaker, Madam, for giving me this opportunity to speak on the Women's Day. At the outset, I would like to congratulate all my colleagues here in Parliament, and I also extend my wishes to all the women of the country.

I would like to say from the bottom of my heart that you are an example and roll model for all of us who are here. Union Minister, Kumari Uma Bharti has stated that you are a person who has built your life on your own terms and you never depended on any background for your political career. Not only that, we see you as a great inspiration because of the recent Women Legislators Conference wherein we all participated. There was a huge applause from all the women legislators who have come from across the country. Women have learnt a lot from this Conference to stand united and extend solidarity.

I would say that reservation is not the only way that women can expose themselves. All of us who are here have come to this Parliament without any reservation, fighting with all the men candidates because there is a woman in every way, in every part of man's life. If we are able to mould our family in such an effective manner, we can always play a major role in the national politics.

On this day, I would like to make a request that we require more encouragement in the Parliamentary Standing Committees and in law-making agencies so that we can contribute our best efforts for this Parliament and for the nation. We all, hereby, on this Women's Day, again in solidarity stand united to fight for the cause of the nation, and we are all there for the nation building.

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल (मेहसाणा) : महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज मैं अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर आपको हृदय से शुभकामनाएं देती हूँ। मैं अपनी साथी महिला सांसदों को, पूरे देश भर की महिलाओं को और पूरे विश्व की महिलाओं को भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देती हूँ।

महोदया, खासकर 5-6 मार्च को आपने एक अनूठी और ऐतिहासिक पहल की। राष्ट्रीय महिला जनप्रतिनिधि सम्मेलन में आपने जो विषय सबको दिये थे, इनमें सामाजिक, आर्थिक, राजकीय और गुड गवर्नेन्स के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं ने बहुत सारे सुझाव भी दिये। मैं चाहती हूँ कि उन सुझावों पर हम सब गौर करें। आज के दिन मैं यह कहना चाहती हूँ सारे सदन को और सारी महिलाओं को अभिनन्दन करना चाहिए कि एयर इंडिया की फ्लाइट सान फ्रांसिस्को से यहाँ दिल्ली में आई 8 मार्च को और कू से लेकर तथा पायलट से लेकर ग्राउंड स्टाफ तक सारी महिलाएँ इसमें थीं। इसके लिए हमें उन सब महिलाओं का अभिनन्दन करना चाहिए, शुभकामनाएँ देनी चाहिए। हमसे पूर्व वक्ता हेमा मालिनी जी ने भी कहा था और महिलाओं का ज़िक्र भी किया था। मैं उसी संदर्भ में कहना चाहती हूँ कि -

"दिन की रोशनी ख्वाबों को बनाने में गुज़र गई,

रात की नींद बच्चों को सुलाने में गुज़र गई,

जिस घर में मेरे नाम की तख्ती भी नहीं,

सारी उम्र उस घर को सजाने में गुज़र गई।"

महिलाओं की स्थिति में अभी सुधार हुआ है। मगर मैं कहना चाहती हूँ कि जब हम लिंग अनुपात की बात करते हैं, ईक्वॉलिटी की बात करते हैं और पूरे देश में जब हम महिलाओं के अनुपात के बारे में चिन्ता करते हैं, तो मैं धन्यवाद देना चाहूँगी हमारी सरकार को, प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को, जिन्होंने हरियाणा में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" का अभियान शुरू किया और सुकन्या समृद्धि योजना की भी शुरूआत वहाँ पर की। मुझे आपको यह कहना है कि गुजरात में शेरों की दहाड़ के बीच भी हमारी महिलाएँ वहाँ रेस्क्यू ऑपरेशन कर रही है, आज महिला वहाँ तक पहुँच गई है। आज महिलाओं ने पूरे आकाश को भी थाम लिया है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपकी तो दो पंक्तियों ने ही सबका दिल जीत लिया है।

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल : मैं दो सुझाव देना चाहती हूँ, जैसे कई सारे सुझाव यहाँ दिए गए हैं। हम 33 प्रतिशत आरक्षण की बात करते हैं मगर खासकर जैन्डर बजट जब हम बनाते हैं तो महिला की भागीदारी भी इसमें होनी चाहिए। हरेक राज्य में जैन्डर बजटिंग अलग होती है। गुजरात में तीसरा बजट मुख्य मंत्री आनन्दीबेन पटेल ने पेश किया है और उसमें महिलाओं के लिए अच्छे से प्रावधान किया गया है। हर राज्य में यदि ऐसा होगा तो मैं मानती हूँ कि महिलाओं को भी पूरा न्याय मिलेगा। मैं यह कहती हूँ कि केन्द्र सरकार के तमाम मंत्रालयों और विभागों में भी 30 प्रतिशत महिलाओं के आरक्षण का प्रावधान करना चाहिए। मैं कहती हूँ कि हमारे देश के शिक्षा के सभी स्तरों पर जो पाठ्यक्रम हैं, उनकी किताबों में महिलाओं के प्रति सकारात्मक अभिगम वाला पाठ्यक्रम शामिल करना चाहिए और सभी पाठ्यक्रमों की समीक्षा भी करनी चाहिए। हम फील्ड में जाते हैं। जहाँ कुमार-कन्या की मिश्रित पाठशालाएँ है, वहाँ गुजरात में जिस तरह 30 प्रतिशत महिला शिक्षिकाओं की भर्ती वहाँ पर की है, ऐसी प्रक्रिया भी करनी चाहिए। इसके अलावा पाठशालाओं में सैनिटेशन का प्रावधान भी करना चाहिए, ताकि महिला अच्छे से शिक्षा भी ले सके।

आखिर में मैं यह कहना चाहती हूँ कि जैसे आज के महिला दिवस पर हमें प्रतीक्षा करनी पड़ी मगर बोलने का मौका मिला, ऐसे ही सिर्फ 8 मार्च को नहीं, बल्कि हर रोज़ हमें थोड़ा-थोड़ा मौका दिया जाए तो हम भी बोल सकेंगे। आखिर में मैं महिलाओं के लिए कहना चाहूँगी कि -

"खड़ा हिमालय बता रहा है डरो न आंधी पानी में

खड़े रहो तुम अपने पथ पर, आंधी और तूफानों में।"

SHRIMATI M. VASANTHI (TENKASI): Madam Speaker, I would first of all, like to extend my warm greetings on the occasion of International Women's Day, to all the women of our nation.

The development of women implies development of the nation. Our leader, the Chief Minister of Tamil Nadu, hon. *Puratchi Thalaivi Amma* strongly believes in this and has taken every action for the welfare of women through many schemes, right from the birth, such as the *Thottil Kulandthai* Scheme, Girl Child Protection Scheme, Free Sanitary Napkins Scheme for Adolescent Girls, Gold for *Mangalsutra*, Cash Assistance for Graduate Women for their Wedding, establishing the first All Women Police Station in the country, Women Self Help Groups, the *Amma* Maternity Scheme and many more schemes for the welfare of women across the State of Tamil Nadu.

Recently, *Amma* has announced to hike the reservation of seats for women in all local bodies in Tamil Nadu to 50 per cent so as to promote women empowerment.

I would like to request the Union Government to take steps to increase the funds under the MPLADS so that we can help women in the rural areas in a better way. Thank you.

माननीय अध्यक्ष : श्रीमती रमा देवी, केवल एक मिनट में बोलें। आज आपको तो बहुत गर्व है, इसलिए एक मिनट बोलो।

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): माननीय अध्यक्ष महोदया, आपको किस रूप में मैं देखती हूं या सदन देखता है, मैं तो ये दो पंक्तियां कहती हूं। 'या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थितः, नमस्तस्यै-नमस्तस्यै, सनस्तस्यै नमो नमः।' जब शक्ति रूप में आती हैं तो या देवी शक्ति रूपेणः, माने नमस्तस्यै-नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः। शक्ति और मातृ रूप दोनों में आप यह सदन देखती हैं। आज मैं दो शब्द कहना चाहती हूं कि आज हम लोग जहां मेरा मायका है, वह वैशाली जिला से, जहां विश्व में सर्वप्रथम वहां लोकतंत्र की स्थापना हुई थी, उस धरती से मैं आई हूं। जहां मेरी ससुराल है, वह चम्पारण की धरती है, जहां महात्मा गांधी ने सत्याग्रह किया था और दांडी यात्रा की थी और उनके मन में एक विश्वास था कि महिलाओं को अगर आगे बढ़ाएंगे तो वह विश्वास की देवी है, ईमानदारी से काम करती है, जैसे अपने परिवारों में ईमानदारी से सब को बराबर हिस्सा देती है, उस तरह अगर इस क्षेत्र में आएगी तो उसके साथ किसी तरह की बेईमानी नहीं होगी, किसी तरह का घोटाला-घपला नहीं होगा तो उनमें विश्वास था।

मैं चाहती हूं कि आज के दिन हम लोग 365 दिन उन लोगों का है, उसमें से अगर एक दिन हम लोगों को मिला है तो थोड़ा सा भरपूर मिले, जैसे लिंग परिवर्तन की बात हुई है कि असमानता है। कारण यही है कि जिस महिला के पेट में, गर्भ में बेटी रहती है तो लोग सोचते हैं कि अरे, बेटी है। जैसे ही बेटी पैदा होती है तो माथा नीचे कर लेता है और घौंना गिरा लेता है। अगर बेटा होता है तो कहता है कि एक लाठी तैयार हो गई। यह अन्तर आज भी समाज में देखा जाता है। मैं चाहती हूं कि अगर बेटी की भ्रूण हत्या नहीं हो, बेटी पढ़ाओ - बेटी बढ़ाओ की जो हम लोगों को शिक्षा हमारे प्रधानमंत्री दे रहे हैं, हम चाह रहे हैं कि जिस तरह से बेटियों को समकक्ष उसकी आवश्यकता है और उसकी ताकत है तो आफिस से जाते-जाते लोग कहते हैं कि चाय बनाओ, मेरा दोस्त आ गया, नाश्ता दो। ऐसी स्थिति जब घर में पैदा होती है तो फिर औरतों को नीचे देखा जाता है। हम समझते हैं कि बेटियों को जो जन्म देता है, वह सोचता है कि जन्म के बाद इसकी सुरक्षा करना, इसकी पढ़ाई करना, इसकी शादी-ब्याह में जो तिलक दहेज लगता है, उसको भी कैसे हम कर सकते हैं तो हम चाहते हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बस हो गया, मैं एक मिनट से ज्यादा समय न लें।

आपकी सब बहुत सी अच्छी बातें आई हैं, आप ताकतवर महिला हैं, बैठिये।

DR. RATNA DE (NAG) (HOOGHLY): The United Nations has come up with the theme for International Women's Day in 2016: 'Planet 50-50 by 2030: Step It Up for Gender Equality'. There is a need to ensure gender equality. It is not going to be an easy task. We live in a world where inequality prevails. To be very frank, inequality is our psyche. To come out of this mould is not easy. It is arduous. It needs a lot of guts, courage and what not.

Woman has the capacity to excel in whatever she does or whatever she aspires for. Our hon. Speaker, Shrimati Sumitra Mahajan is a good example of how women can achieve with hard work, sincerity and perseverance. Our country has produced many eminent women leaders starting from Indira Gandhi, our former President Pratibha Patil, our former Lok Sabha Speaker Meira Kumar. My party, the Trinamool Congress is headed by a woman, Mamata Banerjee who faced all odds to come to this position and become the Chief Minister of West Bengal. We should take up the cudgels. When we come across any injustice, we should not let it go.

I would like to quote Mr. Ban Ki-moon, the UN Secretary-General's message for International Women's Day 2016:

> "We have shattered so many glass ceilings we created a carpet of shards. Now we are sweeping away the assumptions and bias of the past so women can advance across new frontiers."

Before I conclude, Madam, I would like to convey my regards to you and all the hon. Members of this House of all women in my State, in the country and outside the country. Thank you, Madam.

माननीय अध्यक्ष : श्रीमती रीती पाठक, केवल एक मिनट। आज आपने प्रश्न भी पूछा है।

श्रीमती रीती पाठक (सीधी) : अध्यक्ष महोदया, बहुत धन्यवाद। आज महिला सशक्तीकरण दिवस है। अभी हमारी बहन ने भी कहा कि हम एक दिन क्यों मनायें। पर मैं ऐसा मानती हूं कि जन्म दिन तो एक दिन ही मनाया जाता है। खैर, 365 दिन पूरे हमारे ही हैं, लेकिन हमें अपने कर्तव्य को निभाने के लिए उन सारे दिनों में एक दिन तो सैलीब्रेट करना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदया, दो लाइनों से मैं अपनी बात शुरू करना चाहूंगी -

व्यष्टि सुन्दर है, समष्टि सुन्दर है
दृश्य सुन्दर है, दृष्टि सुन्दर है,
त्याग की दिव्यमूर्ति तुम नारी,
जिसके होने से सृष्टि सुन्दर है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, महिला सशक्तीकरण हेतु दो दिनों का महासम्मेलन, जो आपके द्वारा आयोजित किया गया, उसमें प्रधान मंत्री जी ने जो अपना वक्तव्य दिया, उन लाइनों के माध्यम से मैं अपनी बात रखने जा रही हूं। प्रधान मंत्री जी ने कहा - "न जाने कितनी क्षमता है? दोनों हाथें अगर मोबाइल में हों, आपकी उंगलियां लैपटॉप में हों, बच्चों को आप संभाल रही हों, तो भी आप राजनीति के क्षेत्र में अपना सर्वोपरि दिखाती हैं, तो भी आप समाज के क्षेत्र में अपना स्थान बनाती हैं, तो भी आप विश्व में आने वाले हर क्षेत्र में अपना नाम कायम रखती हैं। नारी, तुम शक्तिमान हो और निश्चित रूप से तुम्हें हमारा नमन है।" ऐसे शब्दों से आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने हमें नवाज़ा और हमारा सम्मान किया।

मैं धन्यवाद के साथ आपके माध्यम से बस इतना ही कहना चाहती हूं, चूंकि समय भी बहुत कम है, कि नारी कभी प्रेम की सर्वोच्चता पर राधा कहलाती है, तो कभी मातृभूमि पर प्राणों को न्यौछावर कर झांसी की रानी बन जाती है, तो कभी अंतरिक्ष में जाकर सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला हो जाती हैं, तो कभी खेल के मैदान में सायना नेहवाल और सानिया मिर्ज़ा बन जाती है। कभी त्याग और आत्म बलिदान कर पन्ना धाय बनती है, तो कभी राजनीति में दुर्गा समझी जाने वाली इन्दिरा और सुषमा कहलाती हैं। प्रबंधन और शीर्ष उद्यमों में सावित्री जिन्दल बन जाती है, तो कहीं नीरजा बन मातृभूमि का सम्मान बचाती है।

अध्यक्ष महोदया, इन बातों को कहने का आशय मेरा सिर्फ इतना ही है कि यदि नारी को कमज़ोर आंका जाएगा, तो निश्चित रूप से यह देश कमज़ोर ही होगा। इस देश को मज़बूत बनाने के लिए स्वाभाविक है कि आज हम सब उन बातों को लेकर चलें, जिन बातों को सुषमा जी ने कोट किया कि आज मैं देख रही हूं कि देश के सर्वोच्च पदों पर बैठे हुए गणमान्य यदि नारी सशक्तीकरण की बात कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से महिलाओं को, हम बहनों को भी सशक्तीकरण हेतु आगे बढ़ना चाहिए।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपकी बात को भी कोट करते हुए अपनी बात को समाप्त करना चाहूंगी कि हमें डिमांड नहीं करना, हमें तो बस कमांड करना है।

जय हिन्द, जय भारत।

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL (MIRZAPUR): Happy Women's Day, Madam to you, to all my hon. friends here and women across the nation.

Madam, this Parliament from time to time has enacted various laws to protect the dignity of our women but unfortunately women still continue to be oppressed and exploited in different parts of the country. I will say with all conviction today that the only solution to this problem is having more and more women in our State Legislatures as well as in our Parliament. The Women's Reservation Bill must be brought to the consideration of the House, keeping space for women coming from the marginalized section of this society, the SCs, STs and the OBCs. It is because nobody can talk their pains and their miseries better than them. Our Legislatures must be a reflection of women coming from all sections of the society. Madam, women need to understand that no social reformer, no saint, no political leader and no bureaucrat can create change in our life. We have to be an instrument of change and this process must begin with love for our identity as a woman, self-acceptance, self-exploration, understanding in our strength and facing and fighting our own insecurities and fears to grow as an empowered individual.

Madam, I just want to conclude by saying that a woman is like a tea bag, you never know her strength unless you put her in hot water.

श्रीमती पूनम महाजन (उत्तर मध्य मुम्बई) : अध्यक्ष महोदया जी, मैं अपने दो-तीन मुद्दे रखना चाहती हूं। उस मुद्दे की शुरूआत के पहले मैं दो लोगों को ये मुद्दे समर्पित करना चाहती हूं। इसमें से एक, मेरे माता और पिता हैं, जिन्होंने मुझे पैदा किया और मेरे भाई और मेरे में कोई भी दूजा भाव नहीं रखा और हम सबको समानता दी और दूसरी, ऐसी महिला कुशल संगठक हैं।

अध्यक्ष महोदया जी, बहुत सारे राजा हुए, जिन्होंने इस देश को आगे बढ़ाया। लेकिन, एक ऐसी बेटी, जिसने अपने पिता की उम्मीदों को साकार किया, एक ऐसी पत्नी, जो अपने पति के आदर्शों को आगे ले गयी, एक ऐसी कुशल संगठिता, जो वीरता और ममता का ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण है, historian compares her to the Queen Elizabeth-I of England and Queen Catherine-II of Russia, one such ruler was Holkar, Queen of Malwa kingdom, Lok Mata Punyashlok Ahilya Bai Holkar.

महोदया, वर्ष 1928 तक का इतिहास तो यहां पर बताया गया, लेकिन जो एक कुशल संगठिता थीं, जो एक रानी थीं, उनके इतिहास को भी हम एक बार नमन करके आगे बढ़ना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपको धन्यवाद देना चाहती हूं कि आपने हमें पांच और छः तारीख को एक अच्छा प्लेटफॉर्म दिया, जहां वीमेन लेजिस्लेटर्स कॉन्क्लेव में हमने अच्छा काम किया, हमने अपने विचार रखे। सशक्त भारत के रूप से हम कैसे सशक्त महिला उसे आगे बढ़ा सकती हैं, उस रूप से हमने कार्य किया। प्रधान मंत्री जी ने वहां पर एक बहुत अच्छी सटीक बात कही कि 'वीमेन इम्पावरमेंट' शब्द ही गलत है। वीमेन या महिला शब्द आते ही सशक्तता, इम्पावरमेंट उस महिला से जुड़ती है, इसलिए there is no need of women empowerment because they are already empowered.

महोदया, मैं इसमें तीन मुद्दे रखना चाहती हूं, क्योंकि आपने सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल नम्बर - 5 के बारे में बात कही। तीन मुद्दे बहुत जरूरी हैं, जहां पर हम समानता ला सकते हैं। एक है, मानसिक और शारीरिक। जब हम 'इम्पावरमेंट' शब्द कहते हैं तो 'इम्पावरमेंट' शब्द को बाजू में रख कर हम उसे प्रगतिकरण कह सकते हैं, डेवलपमेंट कह सकते हैं, एक मानसिक-शारीरिक प्रगतिकरण। जब हम सब, एक माता-पिता तय करेंगे कि मेरा बेटा और बेटी समान होंगे, तो ही यह मानसिक और शारीरिक प्रगतिकरण आगे होगा।

इसमें मैं एक छोटा-सा उदाहरण दूंगी। रॉबिन चौरासिया जैसी एक लड़की मेरे चुनाव क्षेत्र में पिता, पति और भाई के कुकर्म से और सेक्स वर्कर्स की बेटियां, इन सबको नए जीवन की उम्मीद देने के लिए उनको पढ़ा रही हैं, उन्हें आगे बढ़ा रही हैं। उन्हें शारीरिक-मानसिक रूप से इन चीज़ों से बाहर लाकर आज रॉबिन चौरासिया ग्लोबल टीचर्स प्राइस में एकमेव ऐसी भारतीय हैं, जिनका नाम उसमें शामिल किया गया है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात एस.डी.जी. नम्बर- 5 में है - 'आर्थिक प्रगतिकरण, उनकी ताकत।' आज आप जानती हैं कि घर का कर्ता पुरुष होता है। लेकिन, जब वह पैसा कमा कर लाता है, तो फिर महिला ही उसका सदुपयोग करती है और घर में उस रूप से उसका काम करती है। हम किसान को इस देश की रीढ़ की हड्डी कहते हैं। लेकिन, जब किसान बीज डालने के लिए गड्ढा खोदता है, तो महिला उसमें बीज डालती है, वह उसमें पानी डालती है। इस देश की व्हाइट रिवॉल्यूशन हो या दूध की क्रांति हो, तो उसमें महिला ही आगे आयी है। उसका भी एक छोटा उदाहरण दूंगी। प्रधान मंत्री जी ने 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' में हम सबको छोटे-छोटे गांव दिए। उसमें से एक गांव वारोटी को मैंने लिया। पूरी तरह से वह आदिवासी गांव है। लेकिन, वहां की सरपंच महिला है - रंजना धापसी। उन्होंने अपनी सक्षमता दिखाई और आज मेरी दोस्त अनीता डोंगरे के साथ हमने वहां पर एक गार्मेन्ट फैक्ट्री बनाई है। वहां पर सौ महिलाएं काम करती हैं। वहां पर जो कपड़े बनाए जाते हैं, वह हमारे गांव वारोटी की महिलाएं बनाती हैं। उसकी एक शॉल भी हमारे आदरणीय वेंकैया नायडू जी ने यहां पहन कर दिखाया था।

तीसरी महत्वपूर्ण बात एस.डी.जी. गोल नम्बर - 5 को पूरा करने की है - 'Political and Organisational Support'. मैंने एक बात कही थी कि हमारे यहां इतिहास में लोक सभा में सबसे ज्यादा महिला एम.पी. हैं, लेकिन लैटिन अमेरिका में यह कहा जाता है और यह शुरूआत है कि 'One woman enters in politics, she changes but many women come in politics, politics change.' हमें बहुत सारी महिलाओं की इसमें बहुत जरूरत है और वह वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में बताया गया।

अन्त में, मैं यह ही कहूंगी कि मुझे गर्व है कि मैं आज़ाद भारत में पैदा हुई हूं। आजकल कुछ दिनों से आज़ादी की परिभाषाएं बहुत अलग-अलग बनाई गयी हैं। लेकिन, एक महिला के नाते मेरी आज़ादी की परिभाषा एक ही है। मेरी परिभाषा है कि मैं आज़ादी चाहती हूं मेरे गर्भ में पली बेटी को बचाने और पढ़ाने के लिए, मैं आज़ादी चाहती हूं कि जो भी कपड़े पहनूं, बिना डर के इस देश में घूमूं, मैं आज़ादी चाहती हूं शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न करने वाले समाज के उस तबके से, मैं आज़ादी चाहती हूं उन विचारों से कि अगर महिला आगे बढ़े तो उसके चरित्र पर सवाल उठाया जाता है, उसकी मेहनत की प्रशंसा बाद में की जाती है और मैं आज़ादी चाहती हूं मन्दिर और दरगाह में जाने के लिए और मैं वहां सुकून से प्रार्थना कर सकूं। यही है सच्चे आज़ाद हिन्दुस्तान की आज़ादी की परिभाषा and this freedom is required for us, not the other *azaadi.*

बहुत-बहुत धन्यवाद।

HON. SPEAKER: Now, Shrimati Aparupa Poddar.

Please conclude within a minute because it is already 1.45 p.m. अब बाकी सब से माफी मांगना पड़ेगा।

SHRIMATI APARUPA PODDAR (ARAMBAG): Thank you, hon. Madam Speaker, for allowing me to speak in this august House. मैं अपने सभी कुलीग्स को वीमेन डे की हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं, आपको भी मैं अपनी शुभकामनाएं देती हूं।...(व्यवधान)

पप्पू भाई, दो मिनट के लिए रूक जाइए। मैं आपके जैसी एक्सपर्ट नहीं हूं।

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी बात बोलिए।

श्रीमती अपरूपा पोद्दार : हम आज जिस क्षेत्र आरामबाग लोक सभा कंस्टीट्युन्सी से चुन कर आए हैं, वहां से सबसे पहली बार मैं एक महिला सांसद के तौर पर चुन कर आई हूं और मैं अपनी पार्टी की लीडर ममता बनर्जी और अपने सभी कार्यकर्ताओं को मैं धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे इस ज़गह पर पहुंचाया है। उस क्षेत्र की सभी माताओं-बहनों को, जिन्होंने सबसे ज्यादा वोट मुझे देकर पश्चिम बंगाल में सेकेंड पोजीशन में मुझे लाए, मैं उनको भी शुभकामनाएं देती हूं।

यहां पर सभी ने अपने-अपने बारे में बताया, लेकिन हमारा क्षेत्र ऐसी जगह है, जहां पर राजाराम मोहन राय जैसे व्यक्तित्व ने जन्म लिया, जिन्होंने सती प्रथा की कुप्रथा को बंद किया, जिसके चलते आज सब महिलायें इस जगह पर सुरक्षित हैं। रामकृष्ण देव का भी जन्म स्थान हमारे ही क्षेत्र में पड़ता है, जिन्होंने समाज को यह समझाया था कि देवी की पूजा करनी चाहिए। इस जगह से जब हम चुनकर आते हैं और अपने क्षेत्र में जब जाते हैं तो जो पिछड़े वर्ग की महिलायें हैं, वे ज्यादा से ज्यादा अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए, शिक्षित करने के लिए और सबसे ज्यादा लड़कियों को शिक्षित करने के लिए हमारी पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी जो विभिन्न स्कीम्स के माध्यम से, कन्याश्री से, शिक्षाश्री से और अन्य स्कीम्स से वे अपने बच्चों को इनवाल्व कराते हैं और उनको एजुकेशन दे रहे हैं। यहां पर सभी सांसदों ने अपनी-अपनी बात कही। पूनम जी अभी बता रही थीं कि अपने क्षेत्र में उन्होंने बहुत अच्छी-अच्छी स्कीम्स की हैं।

माननीय अध्यक्ष : सबने की हैं।

श्रीमती अपरूपा पोद्दार : हम इस ऑगस्ट हाउस को आज इस जगह पर कहना चाहते हैं कि आज की तारीख में जो डिस्कशन हो रहा है, अगर महिलाओं के लिए कोई स्पेशल स्कीम स्किल डेवलपमेंट के लिए हो, जिसमें महिला लोग भाग ले सकें, तो हम लोगों के लिए बहुत अच्छा होगा।

माननीय अध्यक्ष : अनुराग ठाकुर जी, आप युवा हो, युवा की सोच बने तो बहुत प्रभाव होगा, इसलिए मैं आपको एक मिनट का समय दे रही हूँ।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): महोदया, मैं यहाँ से बोलने की अनुमति चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष : जी, बोलिए।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया, मैं एक मिनट से ज्यादा समय नहीं लूँगा। मुझे केवल इतना कहना है कि 16 दिसम्बर की घटना के बाद एक चर्चा इसी सदन में हुई थी महिलाओं के अधिकार के लिए, उनके सशक्तिकरण के लिए। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आपने सभी महिला सांसदों को बोलने का मौका दिया। मुझे केवल इतनी बात रखनी है कि एक सांसद होने के नाते मैंने अपनी जिम्मेदारी समझी और एक ऑनर अवर वुमेन नामक एक संस्था खड़ी की है। जिसमें अरूण जेटली जी से लेकर जय पांडा जी से लेकर, सुप्रिया जी, किरण खेर सब लोगों ने आकर अलग-अलग समय पर महिलाओं के अधिकार, सम्मान, सशक्तिकरण की बात कही और जनता को जागरूक करने का प्रयास किया। पिछले सत्र में हमने एम.पी. कनेक्ट प्रोग्राम शुरू किया, जिसमें उसके अन्तर्गत बहुत सारे सांसदों ने आकर अपनी जिम्मेदारी को संभाला और अपने क्षेत्र में जाकर वुमेन हेल्पलाइन, सेल्फ डिफेंस क्लॉसेज से लेकर अवेयरनेस प्रोग्राम कैसे आगे किए जाएं, उन सब पर अपना सहयोग दिया है। मैं आशा करता हूँ कि और ज्यादा सांसद भी इससे आकर जुड़ेंगे ताकि हम अपने-अपने लोक सभा क्षेत्रों में जाकर महिलाओं के अधिकार, सम्मान और सशक्तिकरण की बात कर सकें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : साध्वी निरंजन ज्योति, मैं आपको एक मिनट का समय देती हूँ, क्योंकि मुझे मालूम है आपने शिक्षा के लिए संघर्ष किया है, स्वयं जीवन में संघर्ष किया है, इसलिए मैं आपको एक मिनट का समय देती हूँ।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (साध्वी निरंजन ज्योति): अध्यक्ष महोदया, आज महिला दिवस के पावन अवसर पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देती हूं कि पहली बार पूरे देश की महिलाओं को बुलाकर आपने जो सम्मान दिया है, मैं यह कह सकती हूं उस दो दिवसीय कार्यक्रम से महिलाओं के अंदर हौसले बुलन्द हुए हैं। मैं बहुत ज्यादा बातें नहीं कहना चाहती, केवल इतना ही कहना चाहती हूं कि महिला दिवस के रूप में मनाना, मैं यह समझती हूं कि हमारे भारत में नारियों का सम्मान सदैव रहा है, चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र में हो, भक्ति के क्षेत्र में हो, राजनैतिक क्षेत्र में हो या फिर गृहणी के रूप में हो। मैं बस इतना ही कहना चाहती हूं कि हमारे अंदर भी क्षमता होनी चाहिए। मेरी हिस्ट्री माननीय गृह मंत्री जी ज्यादा जानते हैं, क्योंकि वे मेरे गांव तक हो आए हैं। मेरे परिवार में कोई राजनैतिक व्यक्ति नहीं है। बस इतना ही कहना चाहती हूं बहनों से कि यदि तुम ठान लो, तारे गगन के तोड़ सकती हो, यदि तुम ठान लो तो अपने सुयश का एक नवअध्याय भी तुम जोड़ सकती हो। यह नारी का सम्मान ही है, यत् नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत् देवताः। आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हुए कहूंगी कि आपने मुझे यहां बोलने का मौका दिया। मैं उस रूरल क्षेत्र से आती हूं, अभी 70 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित हैं। आवश्यकता है महिला दिवस के रूप में, क्रांति लाने के लिए शिक्षा के रूप में, महिलाएं शिक्षित होंगी तो अपना कदम आगे बढ़ा लेंगी। इतना ही कहते हुए, 'बहनों अपनी शक्ति जगाकर जुट जाओ निर्माण में, संस्कृति का सौभाग्य छिपा है, नारी के उत्थान में।'

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT, MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Madam Speaker, I was carefully listening to the various points and suggestions made by hon. Members from different sides of the House today. We have also been receiving suggestions from different people from time to time across the country. After listening to many of the sisters who spoke on this issue, I could realize that if we give an opportunity, they can excel. That is the lesson which all of us have to understand.

You have seen that we made an experiment also this time about the Presidential Address. The Presidential Address is one of the important debates in the House. It was initiated by Shrimati Meenakashi Lekhi. It was seconded by Shrimati Harsimrat Kaur. Both the proposer and the seconder were women. I must say and admit that both of them have effectively put forth the point of view of the Government. I am very happy about it.

Today also, from different parties we have seen different ladies speaking about women's empowerment. They all made wonderful and beautiful points in their own way and that also shows the point, given an opportunity, as I told you, they can excel.

But now the issue is, after these many years of Independence, dowry, child marriage, 'Bhrun Hatya', atrocities against womenâ€”these are still happening. We should all ponder over this. This is not because of this party or that party. I do not want to be, what you call, political in this issue. We have seen that also and if at all somebody has to take the blame, then all of us have to take the blame and take it in proportion to the time we have ruled the country. So, let us not try to make politics out of this. The issue is, the change of mindset. For dowry, there is a law. But has it

changed fully? Then, with regard to atrocities against women, we passed a very stringent law recently, Nirbhaya law. Has it changed the position totally? No. It has changed to some extent but we need to go further.

And, the third one is, as I told you, about the Bhrun Hatya. They are trying to find out whether a girl is going to be born or a boy is going to be born, feticide. We have legally banned that also. But what is happening we are all aware. With regard to dowry harassment also, we know who are responsible for the same. I need not explain further.

So, every section of the society, including men, womenâ€"all of us have to introspect and then we have to create a social atmosphere of that need for change in the country. Some people are saying it is all because of our culture. I do not agree with them. We call this country as motherland, not father's land. We call it as motherland, *Matrubhumi.* That shows the respect which our culture had about a woman in this country.

We also say, Vande Mataram. 'Mataram' is the slogan given during the freedom movement. That also shows what was the thinking at that time of our great forefathers and our leaders. Even in Purana period also, when we take the example of Saraswati as education, people say Education Minister....(*Interruptions*) सर, हमने आपके नेता की बात सुनी है, आप भी हमारी बात सुनिए। ...(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : इसमें नेता का क्वैश्चन नहीं है। ...(व्यवधान) Why are you bringing *netas* name here? You take your part....(*Interruptions*)

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : आप क्यों इंटरफेयर करते हैं?...(व्यवधान)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : It has nothing to do with this. इसका डिसकशन के साथ क्या संबंध है?...(व्यवधान)

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : मैं वहीं पूछना चाहता हूं कि इस डिसकशन के साथ क्या संबंध था, डिस्क्रिमिनेशन।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : वैंकैय्या जी, आप अपनी बात को कंक्लूड करें। सभी ने बहुत अच्छे वातावरण में सदन में चर्चा की है।

â€¦(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: That is your habit to disrupt people in between. What can I do? I cannot change it now at this age.

My point is, you have objection for taking the name of Saraswati. I was talking about Saraswati. I do not know why you suddenly got up and then started making comments against me. It is very uncharitable.

Second thing is, I want to take the name of Parvati. You may have objection for that also. I want to take the name of Lakshmi Devi. ...(*Interruptions*) Madam Speaker, these are all people we admire as Goddess.

HON. SPEAKER: Please conclude now.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: We admire them as Goddess. That is our culture. That is our heritage. That is our tradition. So, what I am trying to say is, now what appears to my mind is, the utmost important thing is, education of the girl child. The Government has started that programme. Earlier Governments have done it and our Government is also doing it in an effective manner. That should be taken up by all the people concerned at various levels.

After *Beti Padhao Beti Bachao*, next is economic empowerment.

Any number of reservations you give, unless you empower women economically, unless you give them some right to property, unless you give them employment opportunities and also self-employment, you will not be able to succeed to end this disparity between man and woman.

Thirdly, Madam, I come from an area where Self-Help Group movement is very powerful and it is where the women are in the forefront. उसमें मैंने स्वयं ग्रामीण विकास मंत्री के रूप में अनुभव किया है कि जो बैंक से ऋण लेते हैं, आज कल हम लोग नॉन परफॉर्मिंग ऐसेट (एनपीए) के बारे में सुनते हैं, उन्होंने इतना दिया, उन्होंने इतना लिया, वगैरह चर्चा में है। But the repayment of loan by the Self-Help Groups is 99.9 per cent. That speaks about the greatness of the women who are dealing in the financial matters.

Then, in the scheme of Housing For All, the title of the house would be in the name of the lady or woman of the house. That also really helps us.

There are also schemes called *Sukanya Samriddhi Yojana* and *Ladli Laxmi Yojna*. Such schemes encourage the female child for education. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Naidu ji, please conclude. There is no doubt that there are many good projects.

...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am concluding, Madam. The Government of the day has initiated many projects for the welfare of the women. But that alone will not be sufficient. So, first, there has to be a social change; second, there has to be economic empowerment and third, there has to be given political empowerment to women. We have given empowerment in panchayat raj and urban local bodies. Now, we have seen the experiment. Initially people used to say, यह नहीं होगा। सरपंच पति होगा, मैक्सिमम एक बार पति होगा, उसके बाद गति क्या होगी, आप लोगों ने अनुभव किया है। उसमें बहुत काफी परिवर्तन आये हैं। ...(व्यवधान) In last 10 years, we could not have reservation for women at Parliament level because there was no consensus. Out Government is also moving in the direction of evolving consensus. ...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : अब आप सभी को शुभकामना दे दीजिए।

...(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: The point is that they could not evolve consensus in 10 years. We are also working in the direction of evolving consensus and I hope we will succeed at the earliest and then we can move forward.

I would like to convey the greetings from my Government to all sisters, mothers and children across the country. We will keep in mind the spirit of the suggestions given with regard to Committees. ...(*Interruptions*) As the Parliamentary Affairs Minister I can tell you that there is no adequate representation of women in Committees. I would request the respective parties to suggest the names of female representatives, we will keep it in mind and remind them also to give adequate representation to women as far as the Parliamentary Committees are concern. That suggestion is well taken.

माननीय अध्यक्ष : मैं माफी चाहूंगी कि मैं सभी को सदन में बोलने के लिए समय नहीं दे पायी - कुमारी शोभा कारन्दलाजे, श्रीमती नीलम सोनकर, श्रीमती संतोष अहलावत, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, श्रीमती कमला पाटले, श्रीमती के.मरगथम, श्रीमती अंजू बाला, श्रीमती कृष्णा राज, मैं इन लोगों से दो बार माफी माँगूगी, क्योंकि मैं उन्हें प्रश्न काल में भी समय नहीं दे पायी, श्रीमती वी. सत्यबामा, हमारे भाई भी हैं - श्री जय प्रकाश नारायण यादव, श्री राजेश रंजन, श्री सत्यपाल सिंह जी, मैं जानती हूं कि ये सभी लोग सदन में बोलना चाहते हैं। आप सभी उसी प्रकार सम्मान प्रकट करना चाहते हैं और अपनी शुभकामनायें देना चाहते हैं, मैं दर्ज करना चाहूंगी कि आप सभी की शुभकामनायें सभी तक पहुंच गयी हैं।

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 3 pm.

13.58 hours

The Lok Sabha then adjourned till Fifteen

of the Clock.

15.04 hours

The Lok Sabha re-assembled at Four Minutes

past Fifteen of the Clock.

(Shri K.H. Muniyappa *in the Chair*)

MATTERS UNDER RULE 377 *

HON. CHAIRPERSON : Hon. Members, the Matters under Rule 377 shall be laid on the Table of the House. Members who have been permitted to raise matters under Rule 377 today and are desirous of laying them, may personally hand over text of the matters at the Table of the House within 20 minutes.

Only those matters shall be treated as laid for which text has been received at the Table within the stipulated time. The rest will be treated as lapsed.